पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.03.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आनन्द धाम हरिद्वार में योग शिविर

आचार्य अखिलेश्वर जी के पावन सान्निध्य में योग साधना शिविर दिनांक 2 अप्रैल से 6 अप्रैल 2014 तक वैदिक योग आश्रम, हरिपुर कलां, निकट भारत माता मन्दिर, हरिद्वार में आयोजित किया जा रहा है।

सम्पर्क करें-09313989311

वर्ष-30 अंक-20 चैत्र-2070 दयानन्दाब्द 190 16 मार्च से 31 मार्च 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.03.2014, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

अमर शहीद, रक्तसाक्षी, आर्य मुसाफिर पं. लेखराम के बलिदान दिवस पर किया स्मरण

पूरे हिन्दु समाज को एक ''ओ३म्'' ध्वज के नीचे संगठित करना ही सच्ची श्रद्धांजलि-डा.अनिल आर्य

श्रीमती सुदेश आर्या भजन प्रस्तुत करते हुए व मंच पर आचार्य धूमसिंह शास्त्री, कविता आर्या, योगेन्द्र शास्त्री, आचार्य सत्यवीर शर्मा, डा.अनिल आर्य, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री रूप किशोर महेश्वरी, कुर्सी पर रचना आहूजा, आदर्श सहगल, अन्जु जावा व राजेन्द्र आर्य।

रविवार, 9 मार्च 2014,आर्य समाज,विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा,दिल्ली के तत्वावधान में पं.लेखराम बलिदान दिवस सौल्लास मनाया गया। समारोह में दिल्ली के कौने कौने से सैंकड़ों श्रद्धालु आर्य जन सम्मिलित हुए।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि पं.लेखराम का बलिदान दिवस आर्य जाति में नये खून का संचार करने वाला है, महापुरूषों के दिवस कौम को नया जीवन देते हैं। आज ओ३म् की पावन पताका के नीचे पूरे हिन्दु समाज को एकत्र करने की आवश्यकता है तभी हम आने वाली विपदाओं का सामना कर सकते हैं। आज हिन्दू अपने ही देश में दूसरे दर्जे का नागरिक बन कर रह गया है। वैदिक विद्वान आचार्य सत्यवीर शर्मा ने पं.लेखराम जी के जीवन की प्रेरक घटनाओं को सुनाकर भाव विभोर कर दिया। श्रीमती सुदेश आर्या के मधुर भजन बरबस सभी को आकर्षित कर रहे थे। समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र गुप्ता (प्रधान, वेद प्रचार मण्डल उत्तर पश्चिमी) ने की व मंच संचालन प्रधान श्री रणसिंह राणा व मंत्री श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने कुशलता पूर्वक किया। विशेष रूप से श्री संजय सुहाग व श्री रूप किशोर महेश्वरी मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्रीमती कृष्णबाला, श्रीमती सुषमा अरोड़ा, श्री सतीश आर्य, श्री सूर्य प्रकाश डुडेजा, श्री धर्मवीर आर्य, श्री सुशील घई, निर्मल जावा, डा.डी.पी.एस. वर्मा, श्री रतन सिंह आदि के पुरूषार्थ से समारोह शानदार सफलता से सम्पन्न हुआ। परिषद् के अधिकारी श्री कृष्णचन्द पाहुजा, महेन्द्र भाई,रामकुमार सिंह, धर्मपाल आर्य, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, विमल आर्य, माधव आर्य आदि प्रबन्ध में सहयोग दे रहे थे। प्रमुख रूप से श्री रवि चड्डा, व्रतपाल भगत, अरूण आर्य, राजीव आर्य, ओमप्रकाश नागिया विराजमान थे।

हरिद्वार में आर्य महासम्मेलन 29 व 30 मार्च को

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 29 व 30 मार्च 2014 को सामुदायिक केन्द्र, सैक्टर-1, बी.एच.ई.एल. हरिद्वार में आयोजित किया जा रहा है । शनिवार, 29 मार्च को प्रात: 10 बजे शोभा यात्रा, दोपहर 3 बजे नारी रक्षा सम्मेलन व रात्री 8 बजे राष्ट्र नीति सत्र होगा, रविवार 30 मार्च को प्रात: 9 बजे शिक्षा सत्र व दोपहर 3 से 5 बजे तक अन्धविश्वास निर्मूलन सत्र होगा। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य **29 मार्च** को **प्रात: 11:00 बजे** पधारेगें ।

सभी आर्य जन भारी सख्या में पधारें।

प्रेमप्रकाश शर्मा	डा.वेदप्रकाश आर्य	दिनेश कुमार आर्य
संयोजक	प्रधान	मन्त्री

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रवि चड्डा व उत्तर पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, दुर्गेश आर्य व मंत्री श्री ओमप्रकाश गुप्ता व सामने श्रद्धालु आर्य जनता का अपार समूह।

'होली का पर्व और वैदिक धर्म'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाये जाने वाले पर्व होली का प्राचीन नाम ''वासन्ती नवसस्येष्टि'' है। यह उत्सव-पर्व वसन्त ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को एक दूसरे के चेहरे पर रंग लगाकर या जल में घुले हुए रंग को एक दूसरे पर डाल कर तथा परस्पर मिष्ठान्न का आदान-प्रदान कर इस पर्व को मनाने की परम्परा चली आ रही है। यह भी कहा जाता है कि इस पर्व के दिन पुराने मतभेदों, वैमनस्य व शत्रुता आदि को भुला कर नये मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का आरम्भ किया जाता है। कुछ-कुछ कहीं आशानुरूप होता भी है परन्तु इसका पूर्णतः सफल होना संदिग्ध है। सर्वत्र रंग-बिरंगे फूलों के खिले होने से वातारण भी रंग-तरंग-मय या रंगीन सा होता है। इस कारण वासन्ती नवसस्येष्टि, अपर नाम होली, को रंगों के पर्व की उपमा दी जा सकती है। वसन्त ऋतु भारत में होने वाली 6 ऋतुओं का राजा है। वसन्त ऋतु में शीत ऋतु का अवसान हो जाता है और वायुमण्डल शीतोष्ण जलवायु वाला होता है। वृक्षों में हरियाली सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है और नाना प्रकार के फूल व हरी पत्तियां सारी पृथिवी पर सर्वत्र दिखाई देतीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने किसी विशेष अवसर पर किसी महनीय उद्देश्य से अपना श्रृंगार किया है। यह श्रृंगार वसन्त ऋतु व चैत्र के महीने से आरम्भ होने वाले नवसंवत्सर का स्वागत करने के लिए ही किया जा रहा प्रतीत होता है। टेसू के वृक्षों पर फूलों से लदी हुई डालियां शोभायमान होकर कहती है कि तुम भी हमारा अनुसरण कर अपने जीवन को विभिन्न सात्विक रंगों से रंग कर नवीन आभा से शोभायमान हो। इस वातावरण में मन उमंगों से भरा होता है। प्रकृति के इस स्वरूप को देखकर सात्विक मन वाला व्यक्ति कह उठता है कि हे ईश्वर तुम महान हो। नाना प्रकार के फलों, पत्तियों व वनस्पतियों से अलंकृत सारी सृष्टि को देखकर भी यदि मनुष्य इन सबके रचनाकार को अनुभव वा प्रत्यक्ष नहीं करता तो एक प्रकार से उसका ऐसा होना जड़-बुद्धि होने का प्रमाण है। भिन्न-भिन्न रंगों के पुष्पों की छटा व सुगन्धि वातावरण में फैल कर सन्देश दे रही है कि तुम भी भिन्न-भिन्न रंगों व सुगन्धि अर्थात् विविध गुणों को जीवन में धारण करो, जो कि आकर्षक हो तथा जिससे जीवन पुष्पों की भांति प्रसन्न, खिला-खिला तथा दूसरों को भी आकर्षित व प्रेरणा देने वाला हो। यह प्रकृति के विभिन्न रंग ईश्वर में से ही तो प्रस्फुटित हो रहे हैं जिससे अनुमान होता है कि सात्विक व्यक्ति को भी निरा एकान्त सेवन वाला न होकर समाज के साथ मिल कर अपनी प्रसन्नता को सात्विक रंगों के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहिये। ऐसे ही कुछ मनोभावों को होली के फाग वाले दिन लोग क्रियान्वित करते हुए दिखते हैं। होता यह है कि त्यौहार के दिन जिस व्यक्ति को जो व्यस्न होता है, वह उसका सेवन कर स्वयं को प्रसन्न करता है। आजकल होली के अवसर पर मदिरापान का कृत्य कुछ इसी प्रकार का लगता है। मदिरापान जीवन को विवेकहीन बना कर पतन की ओर ले जाने वाला पेय है। इस प्रकार से होली मनाने का वैदिक संस्कृति से अनभिज्ञ लोगों का यह अप्रशस्त तरीका है।

हम देखते हैं कि होली पर पूर्णिमा वाले दिन देर रात्रि को होली का दहन करते हैं। बहुत सारी लकड़ियों को एक स्थान पर एकत्रित कर अवैदिक विधि से पूजा-अर्चना कर उसमें अग्नि प्रज्जवलित कर दी जाती है। कुछ समय तक वह लकड़िया जलने के बाद बुझ जाती है। लोग यह समझते हैं कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा धार्मिक कृत्य कर लिया है जबकि ऐसा नहीं है। होली को इस रूप में जलाना किसी प्राचीन लुप्त प्रथा की ओर संकेत करता है। सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों की प्रेरणा के अनुसार अग्निहोत्र-यज्ञ करने की प्रथा हमारे देश में रही है। आज भी यह यज्ञ आर्य समाज मन्दिरों व आर्यो के घरों में नियमित रूप से किये जाते हैं। पूर्णिमा व अमावस्या के दिन पक्षेष्टि यज्ञ करने का प्राचीन शास्त्रों में विधान है जिन्हें दर्श व पौर्णमास नामों से जाना जाता है। जो कार्य परिवार की इकाई के रूप में किया जाता है वह स्वाभाविक रूप से छोटा होता है तथा जो सामूहिक स्तर पर किया जायेगा वह वृहतस्वरूप वाला होगा जिससे उसका प्रभाव परिमाण के अनुरूप होगा। होली का दिन पूर्णिमा का दिन होता है। फाल्गुन के महीने में इस दिन किसानों के खेतों में गेहूं की फसल लहलहा रही होती है। गेहूं की बालियों में गेहूं के दाने पूरी तरह बन चुके हैं, अब उनको सूर्य की धूप चाहिये जिससे वह पक सकें। इन गेहूं की बालियों वा इनके भुने हुए दानों को होला कहते हैं। कुछ दिनों बाद ही वह फसल पक कर तैयार हो जायेगी और उसे काटकर किसान अपने घर के खलिहानों में संभालेगें। इस संग्रहित अन्न से पूरे वर्ष भर तक उनका परिवार व देशवासी उपभोग करेगें जिससे सबको बल, शक्ति, ऊर्जा, आयु, सुख, प्रसन्नता व आनन्द आदि की उपलब्धि होगी। गेहूं की बालियों अथवा होला को पूर्णिमा के यज्ञ में डालने से वह अग्नि देवता द्वारा संसार के समस्त प्राणियों व देवताओं को पहुंच जाती हैं और देवताओं का भाग उन्हें देने के बाद कृषक व अन्य लोग उसका उपयोग व उपभोग करने के लिए पात्र बन जाते हैं। होली का पौराणिक विधान उसी नव-अन्न-इष्टि यज्ञ की स्मृति को ताजा करता है। इसी कारण प्राचीन काल में इस पर्व को नवसस्येष्टि कहा जाता था। आज के दिन होना तो यह चाहिये कि होली का स्वरूप सुधारा जाये। होली रात्रि में न जलाकर दिन में 10-11 बजे के बीच गांव-मुहल्ला के सभी लोगों की उपस्थिति में एक स्थान पर वृहत्त यज्ञ के अनुष्ठान के रूप में आयोजित की जाये। कोई वैदिक विद्वान जो यज्ञ के विशेषज्ञ हों, उस यज्ञ को करायें। उसका महत्व उपस्थित जनता को विदित करायें और यज्ञ के अनन्तर सभी स्त्री-पुरूष मिलकर एक दूसरे को शुभकामनायें दें और अपनी ओर से मिष्ठान्न वितरित करें। वहां एक बड़ी दावत या लंगर भी होली या नवसस्येष्टि पर्व के उपलक्ष्य में किया जा सकता है। लोकाचार व प्रचलित व्यवस्था के अनुसार यदि चाहे तो प्राकृतिक रंग का तिलक-टीका चेहरे पर लगाकर शुभकामनाओं का परस्पर आदान-प्रदान भी किया जा सकता है।

प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का एक-एक पर्व है जिनके नाम क्रमशः श्रावणी या रक्षा-बन्धन, दशहरा या विजयादशमी, दीपावली या शारदीय नवसस्येष्टि एवं होली या वासन्ती नवसस्येष्टि हैं। हमारे यहां प्राचीन काल से ही यज्ञों की परम्परा रही है। प्रत्येक पूर्णिमा व अमावस्या को पक्षेष्टि यज्ञ किये जाते थे तथा आर्य समाज की स्थापना से यह पुनः प्रचलित हो गये हैं। गेहूं नयी फसल के दानों से पूर्णिमा के वृहत्त यज्ञों में आहुतियां देने से होली नाम सार्थक होता है। ऐसा ही प्राचीन काल में होता रहा था जिसका बिगड़ा हुआ रूप वर्तमान का होली का पर्व है। यद्यपि यह पर्व कृषकों, श्रमिकों व वैश्य वर्ण का है तथापि इसको सभी वर्णों व समुदायों के द्वारा मिलकर मनाये जाने से समाज में एक अच्छी भावना का उदय होता है। समय के साथ-साथ कुछ लोगों के साधन बहुत बढ़ गये हैं। अधिक प्रजाजन मध्यम श्रेणी व साधनहीन हैं। धनी हर कार्य में, दिखावें की अपनी कृत्रिम मानसिक प्रकृति व रूतबे के लिए, प्रभूत धन व्यय करते हैं। अन्य मध्यम व निम्न वर्ग वाले इनका अन्धानुकरण करते हैं। इस सबने व मध्यकालीन अज्ञान व अन्धकार ने पर्वो की मूल भावना को विस्मृत करा दिया है। गेहूं के दानों से युक्त बालियां समस्त मनुष्य समाज के लिए आवश्यक, अपरिहार्य व महवपूर्ण हैं। हमारा देह व शरीर अन्नमय है। अन्य सभी प्राणियों के शरीर भी अन्नमय हैं। इनका प्रतीक यदि सभी अन्नों में मुख्य गेहूं वा होला को मान ले तो कृषक व ईश्वर द्वारा उसका निर्माण व उत्पादन होने में तथा खेतों में फसल को लहलहाते देख कृषकों-श्रमिक-वैश्य बन्धुओं व प्रकारान्तर से सभी प्रजा-जनों को जो प्रसन्नता होती है उसको अभिव्यक्त करने के लिए वृहत्त यज्ञ रचाने व सबके द्वारा उसे मिलकर करने, उसमें नवान्न गेहूं के दानों होलकों की यज्ञ-द्रव्य के रूप में आहुतियां देने जिससे ईश्वर की कृपा से वह अन्न सभी देशवासियों की सुख-समृद्धि का आधार बने, यह भावना निहित दिखाई देती है।

एक बार रंगों के बारे में पुनः विचार कर इसमें निहित सन्देश को जानने का प्रयास करते हैं। सभी रंग ईश्वर के बनाये हुए हैं। इसकी भी जीवन में कुछ उपयोगिता अवश्य होगी अन्यथा ईश्वर इन्हें बनाता ही क्यों?यदि विचार करें तो जीवन में शैशव काल के बाद बाल्यावस्था आती है जब माता-पिता बालक-बालिका को गुरूकुल भेजकर उसे शिक्षा व संस्कार देने का प्रयास करते हैं। बाल्यावस्था के बाद युवावस्था आरम्भ होती है, यह भी जीवन का एक भाग या रंग है जब मनुष्य में शक्ति व उत्साह हिलोरें लेता है। जीवन की इस अवस्था में मनुष्य उपलब्धियां प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द भी 18 वर्ष की आयु में अपना घर, परिवार, गली-मोहल्ला, माता-पिता, भाई-बन्धु व मित्र-सखाओं को छोड़ कर संसार की सच्चाई व रहस्य को जानने के लिए तथा सृष्टिकर्ता को जानकर उसे प्राप्त करने, जिसे हम सच्चे शिव की खोज कहते हैं, निकले थे। इसके अतिरिक्त उनके मन में मृत्यु का डर भी भरा हुआ था जिससे वह बचना चाहते थे। इस डर पर विजय पाने के उपाय ढूंढ़ना भी उनका उद्देश्य था जिसमें वह सफल हुए। मृत्यु पर विजय पाने का प्रमाण उनकी स्वयं की मृत्यु का दृश्य है। हम देखते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में हुई उनकी मृत्यु व उससे पूर्व के शारीरिक कष्ट उन्हें किंचित विचलित नहीं कर पाये थे। युवावस्था से पूर्व तथा युवावस्था का कुछ समय विद्यार्जन में लग जाता है। इसके बाद विवाह होता है और फिर व्यवसाय का चयन, सन्तति वृद्धि व सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा के दायित्व होते हैं। युवावस्था में व्यक्ति अच्छे या बुरे, अपने स्वभावानुसार, ज्ञान, सामर्थ्य, अन्तःप्रेरणा आदि से प्रभावित होकर कार्य करता है। युवावस्था के बाद परिपक्वता आती है जो युवावस्था का सांध्यकाल होता है और इसके कुछ समय बाद वृद्धावस्था आरम्भ होती है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अपना-अपना महत्व व उपयोगिता है और इसमें नाना प्रकार के रंग होते हैं। रंग अर्थात् जीवन की भिन्न-भिन्न अवस्थायें। अन्य अवस्थाओं को छोड़कर यदि युवावस्था पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि वह आज के युवा सब आधुनिकता के रंग में रंगे हैं जिसमें बुद्धि का उपयोग नाममात्र है। हमें लगता है कि कुछ थोड़ी सी बातें अच्छी हो सकती हैं। आधुनिक जीवन शैली हमें विनाश की ओर अधिक ले जा रही है परन्तु हमारे युवाओं में सोचने व समझने की अधिक क्षमता नहीं है। आजकल का सामाजिक व वैश्विक वातावरण भी अनुकूल न होकर प्रतिकूल है। हमें यहां विवेक से अपना मार्ग तय करना होगा। आज की हमारी युवापीढ़ी जो आधुनिकता की चकाचौंध से सम्मोहित हो रही है उसने वेद, वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित और उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ नहीं पढ़े हैं। यदि पढ़े होते तो फिर वह बुद्धि व ज्ञान की आंखें बन्द करके आधुनिकता को न अपनाते और अपना भला-बुरा समझ पाते। अतः होली का पर्व मनाते हुए हमें आत्म-चिन्तन कर अच्छे-बुरे में भेद कर भद्र या अच्छे को अपनाना होगा और अन्य अविवेकी लोगों की भांति आधुनिकता में न बह कर सत्य, वैदिक ज्ञान व विवेक के मार्ग पर चलना होगा अन्यथा आधुनिक जीवन शैली भविष्य में हमारे लिए पश्चाताप का कारण होगी। अतः युवापीढ़ी को अपनी बुद्धि को सत्य व असत्य तथा अच्छे व बुरे का निर्णय करने में समर्थ बनाना चाहिये और असत्य को त्याग कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये, यही होली पर विचार व चिन्तन करने का एक विषय हो सकता है।

हमारे धर्म व संस्कृति का आधार वेद एवं वैदिक साहित्य है। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। ईश्वर इस सृष्टि का रचयिता व समस्त प्राणि जगत का उत्पत्तिकर्ता है। वह बड़े से बड़े वैज्ञानिक से अधिक ज्ञानवान, बड़े से बड़े मनुष्य आदि प्राणी से कहीं अधिक बलवान ही नहीं अपितु सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सत्य-चित्त-आनन्द स्वरूप, निराकार व सृष्टि का धारण व पोषण-कर्ता है। इसने हमें मनुष्य का जन्म किसी विशेष उद्देश्य व लक्ष्य की पूर्ति के लिये दिया है। हमें उसे जानना है। वह लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष है। दुःखों से निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति का मार्ग वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन-स्वाध्याय, याज्ञिक कार्य व वैदिक जीवन है। धर्म अर्थात् कर्तव्य व वेद विहित कर्म यथा सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ अतिथि-यज्ञ व बलिवैश्वदेव-यज्ञ आदि कर्म हैं। इनका पालन व आचरण ही धर्म है। मनुष्य को अपनी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करनी है जो वेदाध्ययन पर जाकर पूरी होती है। इन्हें जानना व इनका पालन करना धर्म होता है। इनको करते हुए धर्म से अर्थ का उपार्जन करना व धर्म व अर्थ से जो सुख की सामग्री

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सच्चे शिव की खोज में निकले एक फकीर के अधूरे सपने...

-ओम सपरा

साधारण बालक से असाधारण संत बनने की अद्वितीय जीवन यात्रा की एक छोटी सी कहानी आपने अवश्य पढ़ी होगी। ''गुजरात के एक सुदूर गांव टंकारा में बरसों पहले शिवरात्रि के दिन एक बालक मूलशंकर को उसे पिता मंदिर में बिठाकर देखभाल करने को कह कर गये थे। जब रात्रि को सब सो गये तो भी वह बालक उत्सुकतावशा जागता रहा, मूर्ति को श्रद्धा और कौतिक से देखता रहा। उसके मन में यह जानके इच्छा थी कि जो नैवेद्य फल आदि भक्तों ने इस मूर्ति को अर्पित किये हैं, क्या यह मूर्ति उन्हें खा लेगी या कुछ ऐसा होगा कि जो विलक्षण हो, ऐसा लगे वह ईश्वर है। अचानक देर रात्रि में, कुछ मूषक आये और मूर्ति पर उछल–कूद करने लगे और फल–फूल को खाने लगे। इस दृश्य को देखकर भोले बालक में कौतूहल हुआ, जिज्ञासा हुई कि जो स्वयं की चूहों से रक्षा नहीं कर सकता, वह ईश्वर नहीं हो सकता। उसे अचानक महसूस हुआ कि जो पूरे संसार की रक्षा करता है, वह अवश्य ही कोई और है। बस इसी प्रश्न व शंका के समाधान के लिये वह व्यग्र हो गया।'' वह सच्चे गुरू और सच्चे शिव की खोज में सच्चा जिज्ञासु और अन्वेषक बन गया।

सचमुच, असाधारण व्यक्ति ''सामान्य सी दिखने वाली चीजों, घटनाओं'' का एक अलग तरह से अवलोकर करते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं। इसीलिये वे आम लोगों से ''डिफिरेंट'' होते हैं। जैसे गैलिलियो ने देखा कि सेब पेड़ से टूटकर नीचे गिरा, उपर क्यों नहीं गया ?इसी शंका का समाधान गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत के रूप में हुआ। क्या आप जेम्स वाट का उदाहरण भूल सकते हैं– उसने चाय उबलती केतली को देखकर स्वयं प्रश्न किया कि भाप के दबाव से केतली का ढक्कन बार–बार उपर क्यों उठ जाता है। वह सोचता रहा, मनन करता रहा। इसी के फलस्वरूप भाप से इंजन, फिर मालगाड़ी बनी। इसी प्रकार वैज्ञानिक न्यूटन ने गति के नियम खोजे। जिज्ञासा ही सब आविष्कारों या आध्यात्म के क्षेत्र में नये सिद्धांतों का आधार बनती है।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. भवानीलाल भारतीय ने लिखा है कि वेदों में वर्णित यह रूद्र ''सहस्राक्षा''–हजार आंखों वाला अथवा सर्वत्र फैले चार चक्षुओं–जासूसों वाला कहा गया है। जो अपनी सतर्कता व सावधानी से संपूर्ण राज्य पर नजर रखता है। रूद्र के लिये ''कर्यदा'' शबद प्रयुक्त हुआ है, जो उसके जटाजूट का वाचक है। शिव की अधिकांश मूर्तियों में उनकी जटाओं तथा मस्तक पर चंद्रमा एवं गंगा की उपस्थिति दिखाई जाती है। हिंदू धर्म में ब्रहमा, विष्णु, महेश अर्थात शिव की उपासना का प्रचलन है। रूद्र को शिव अथवा नीलग्रीव भी कहा जाता है। शिव के विषपान पीने और उनके कण्ठ के नीले होने की कथा तो सर्वविदित है ही। रूद्र परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे माता–पिता, बालकों आदि की रक्षा करे। यह दुष्टों के दमन, क्षुद्र के प्राणियों को उनका भोज्य पदार्थ आदि उपलब्ध कराने तथा दुष्ट लोगों को दंड देने का विधान करता है। रूद्र और शिव के वाचक इन यजुर्मन्त्रों का संग्रह रूद्राध्याय या रूद्रों के नाम से शैव मंदिरों में सस्वर पढ़ा जाता है। रूद्र के राजा तथा सेनापति सूचक अर्थों के अतिरिक्त जब हम रूद्र को सृष्टि के संहारकर्ता रूप में स्मरण करते हैं तो हमारा ध्यान एक अच्छे राजा या शासक की ओर जाता है, जो दुष्टों को दमन करता है, उन्हें रूलाता है और अच्छे लोगों का संरक्षण करता है। वैदिक धर्म में एक परमात्मा का इंद्र, मित्र, वरूण, सुपर्ण, अग्नि, यम तथा मातरिश्वा आदि नामों से पुकारा गया है। ''एकं सद् विप्रा बहुधा वदंति''– ऋग्वेद–1/164/46 में कहा गया है कि एक ही सत्य को विद्वान लोग विभिन्न नामों से पुकारते हैं। इस प्रकार ऋग्वेद के 16 वें अध्याय में 66 मंत्रों में रूद्ररूपी सेनापति के मन्यु अर्थात् क्रोध का उल्लेख है, जो दुष्टों को दंड देने की क्षमता रखता है, साथ ही उसके तीक्ष्ण बाणों तथा शक्तिशाली भुजाओं का भी स्मरण किया गया है।

देखिये, सत्य कितना कड़वा होता है कि महर्षि दयानंद को एक धर्मान्ध व्यक्ति ने विष पिला दिया। स्वयं विषपान कर संसार को अमृत पिलाने वाले अनोखे व्यक्तित्व ऋषि दयानंद ने सभी प्रकार के अंधविश्वासों से लोगों को मुक्त होने को प्रेरित किया। उन्होंने वेदों के नाम पर प्रचलित गलत अर्थों को व्याकरण के अनुसार ठीक करने का सफल कार्य किया। उन्होंने अच्छे शासक के क्या गुण होते हैं, प्रजा के क्या कर्तव्य या अधिकार हैं, उनका प्राचीन ग्रंथों के आधार पर सुंदर विवेचन किया और पूरे मानव समाज का मार्गदर्शन किया। उन्होंने सभी लोगों के साथ–साथ ही कथित दलित, शूद्रों को अपने नाम के साथ ''आर्य'' शब्द लगाने अर्थात श्रेष्ठ मानव कहलाने का मार्ग प्रशस्त किया और उन्हें मानव के बराबर होने का अहसास कराया।

उस जमाने में भी ''स्त्री विमर्श'' की बात करना और महिलाओं को शिक्षा, सम्मान दिलाने का सबसे अच्छा उदाहरण महर्षि दयानंद के अतिरिक्त कौन हो सकता है। वो ईश्वर को मानने वाले सच्चे अर्थों में आस्तिक भी थे, जनवादी भी थे और प्रगतिशील संत भी थे। शिव का अर्थ कल्याणकारी भी होता है। यजुर्वेद के छह मंत्रों में शिव को कल्याणकारी संज्ञा देते हुए समस्त मानवजाति को कल्याण अर्थात वैलफेयर स्टेट' बनने का सपना बुना गया है। एक मंत्र इस प्रकार है–यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरंगमंज्योतिषां जयोतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। यजु–34/1 इसीलिये ऋषि दयानंद ने कहा था कि वेदों की ओर लौटो। उसमें हमारे समाज की समस्त समस्याओं का हल है। एक ऐसी सुंदर राज्य–व्यवस्था और भव्य समाज की कल्पना की गई है, जिसमें सब मानव राजा के समक्ष बराबर हैं, उन्हें अन्याय, अभाव, अज्ञान से बचाने का दायित्व सरकार का है। यदि हम समझ लें कि सच्चे शिव की खोज में निकले एक फकीर के सपने को हमने अपने मन की आंख से देखना, समझना है तो निश्चय ही उस अधूरे सपने को पूरा करने के लिये मात्र भावुक नहीं होंगे अपितु कुछ ठोस कार्य करते हुए उस फकीर के सपने को अपने दिल–दिमाग में धारण कर लेंगे और हम महसूस करेंगे कि हम एक प्रगति से सराबोर, समतामूलक समाज के निर्माण की ओर अग्रसर हैं और हम यह मान लेंगे सच्चे मानववाद के हजारों सरल–पथ हमारी राह में हैं।

– एन–22, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–9, मो. 9818180932, e-mail: omsapra@gmail.com

।। ओ३म् ।।

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे, वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक तन में एक बूंद भी लहु की बाकी है, भारत की आज़ादी को गुमनाम नहीं होनें देंगे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली

के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 83वें बलिदान दिवस पर
शहीदों की अमानत है – भारत की आजादी

राष्ट्र रक्षा यज्ञ व आतंकवाद विरोधी दिवस

रविवार, 23 मार्च 2014, प्रातः 11:00 बजे से 2:00 बजे तक

स्थान : जन्तर मन्तर रोड़, नई दिल्ली-110001

अध्यक्षता : आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी ● यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य महेन्द्र भाई जी

मुख्य वक्ता

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री	श्री जयभगवान गोयल	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम
श्री रजनीश गोयनका	डॉ. वीरपाल विद्यालंकार	श्री संदीप आहूजा
श्री रविदेव गुप्ता	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	श्री रविन्द्र मेहता
श्री ओम सपरा	श्री रवि चड्डा	श्री सुरेन्द्र गुप्ता
श्रीमती रचना आहूजा	श्रीमती गायत्री मीना	श्री ब्रहमप्रकाश मान

आमन्त्रित आर्य नेता : सर्वश्री रामकृष्ण सतीजा, डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, आ. प्रकाशवीर शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, जितेन्द्र डावर, चतरसिंह नागर, अर्चना पुष्करणा, विम्मी अरोड़ा, रणसिंह राणा, जितेन्द्रसिंह आर्य, राजेश मेहन्दीरत्ता, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना, वेदप्रभा बरेजा, उर्मिला आर्या, अन्जु जावा, सन्तोष वधवा, विजयारानी शर्मा, लक्ष्मी सिन्हा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, संगीता गौतम, विश्वनाथ आर्य, कै.अशोक गुलाटी, उमा मोंगा, अरूणा मुखी, विजय चोपड़ा, सरला वर्मा, सत्यदेव वर्मा, पुष्पलता वर्मा, देवदत्त आर्य, महावीरसिंह आर्य, सी.एल.मोहन, अमीरचन्द रखेजा, अमर सिंह सहरावत, वेदप्रकाश, मुकेश सुधीर, यज्ञवीर चौहान, विनोद बजाज, जगदीश मलिक, डा. दयानन्द आर्य, ओमप्रकाश अग्रवाल, प्रभा ग्रोवर, स्वर्ण गम्भीर, विजय गुप्त, विजय सचदेवा, गोपाल जैन, दिनेश आर्य, वेदप्रकाश आर्य, वी.के. रैल्ली, हरिचन्द आर्य, सुमन नागपाल, आचार्य सुधांशु, चन्द्रमोहन कपूर, सरोज भाटिया, मकेन्द्र कुमार, भूदेव आर्य, विनोद कद, अमरनाथ बत्रा, मानवेन्द्र शास्त्री, रमेश योगी, प्रेमकान्त बत्रा, अगंदसिंह आर्य, राजेन्द्र लाम्बा, रामसेवक आर्य, ओमवीरसिंह, विजय सब्बरवाल, महेन्द्रसिंह चौहान, सुधा वर्मा, लाला मेघराज आर्य, हरिचन्द स्नेही, अनिता कुमार, सत्यपाल सैनी, रामचन्द कपूर, रमेश गाडी, अनिल हांडा, एस.डी.त्यागी, सौरभ गुप्ता, भगतसिंह राठी, अमरनाथ गोगिया, विजय कपूर, अरूण आर्य, विमल आर्य।

आतंकवाद के विरूद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे

-: निवेदक :-

डा॰अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामन्त्री	रामकुमार सिंह प्रान्तीय संचालक	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव	विकास गोगिया स्वागताध्यक्ष
कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मन्त्री	सुशील आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	संतोष शास्त्री प्रान्तीय महामन्त्री	प्रवीन आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	विश्वनाथ आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	आनन्दप्रकाश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	मनोहरलाल चावला राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	वीरेन्द्र योगाचार्य राष्ट्रीय मन्त्री	सुरेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री

कार्यालयः- आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, फोनः 9810117464, 9013137070

(पृष्ठ 2 का शेष पर)

प्राप्त हो, उसका वैदिक-मर्यादाओं के अनुसार उपभोग करना, 'काम' है। इनको करते हुए उपासना-योग से ईश्वर का साक्षात्कार होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहां पहुंच कर जीवन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। जीवन का लक्ष्य मोक्ष समीप होता है। यदि इस मार्ग का अनुसरण नहीं करेगें तो हमारा यह जन्म व परजन्म दोनों दुःखों से पूर्ण व असफल होगें। हमने देखा है कि कोई भी समझदार व्यक्ति किसी अशिक्षित का अनुकरण व अनुसरण कभी नहीं करता, यदि करता है तो वह मूर्ख होता है। परन्तु यहां हम देखते हैं कि जीवनयापन के क्षेत्र में हम मूर्खो का प्रायः अनुकरण करते हैं व कर रहे हैं। हमें जिन लोगों को शिक्षित करना था हमने उनके मूर्खतापूर्ण कार्यो का अपनी कामनाओं की पिपासा को भोग द्वारा शान्त करने के लिए अनुसरण किया। यह हमारी भारी भूल है जिसका सुधार हमें करना होगा अन्यथा इसका असुखद परिणाम कालान्तर में हमारे सामने आयेगा। अतः सत्यासत्य के विवेक में देरी करना हानिकारक है। यहां इतना अवश्य कहना है कि वेद व वैदिक साहित्य में वर्तमान मे मनाई जाने वाली होली का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। महर्षि दयानन्द ने भी अपने विस्तृत साहित्य में इस प्रकार की होली का उल्लेख या विधान नहीं किया है, केवल नवसस्येष्टि का ही उल्लेख उन्होंने किया है। पुराणों में भी इस प्रकार की होली का विधान होने का अनुमान नहीं है। पुराणो में एक राजा हिरण्यकशपु, उसकी बहिन होलिका व पुत्र प्रहलाद् की कथा आती है जिसका उद्देश्य ईश्वर की उपासना व भक्ति का सन्देश देना है जिससे लोग ईश्वर भक्ति में प्रवृत्त हों। इस कथा का वर्तमान की होली से कोई सीधा व लाभकारी सम्बन्ध नहीं है।

होली के दिन फाल्गुन मास समाप्त होता है तथा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष का आरम्भ होता है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष से नया वैदिक संवत्सर आरम्भ होता है। हमें लगता है कि होली का पर्व पुराने वर्ष को पूर्णिमा के दिन वृहत अग्निहोत्र-यज्ञ से विदाई देकर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन एक प्रकार से नये वर्ष के स्वागत का पर्व भी है। पौराणिक परम्परा के अनुसार स्वागत के लिए पुष्पों व पुष्प-मालाओं का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार पुष्प भेंट कर यह दिखाया जाता है कि फूलों की तरह नाना रंगों से विभूषित व सुन्दर तथा उनकी सुगन्धि की महक से स्वयं को सुवासित कर रहे हैं। प्रकृति इस दिन पहले से ही नाना रगों के फूलों से सज-धज कर चैत्र मास के स्वागत के लिए तैयार होती है। वायुमण्डल व मौसम भी अपनी शीतलता को कम कर देता है। इस दिन, यदि वर्षा आदि न हो, तो बहुत सुहावना व अनुकूल मौसम होता है। लगता है कि प्रकृति अपने रंग-बिरंगे फूलों व उनकी सुगन्ध से नये वर्ष के प्रथम महीने चैत्र का स्वागत कर रही है। हम यज्ञ से वातावरण में सुगन्ध उत्पन्न करते हैं तो प्रकृति भी पुष्पों की सुगन्ध से वातावरण को सुवासित करती है। यह प्रकृति का स्वयं का सृष्टि-यज्ञ है। इसी का प्रतीक हमारा यज्ञ भी होता है। हमारा जीवन उत्साह, उमंग, जोश, विवेक, ज्ञान, उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, आत्म-कल्याण की भावना, वेदों के प्रचार की कामना व भावना, सत्य के प्रति आग्रह का स्वभाव आदि से भरा होनी चाहिये। यही इस पर्व से द्योतित होता लगता है। इस अवसर पर हमारी सबको शुभकामनायें।

-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,फोनः 09412985121

भाजपा नेता श्री नितिन गडकरी से भेंट व महात्मा वेद भिक्षु जयन्ती सम्पन्न

दिनांक 11 मार्च 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के नेतृत्व में आर्य समाज के प्रतिनिधि मण्डल ने श्री नितिन गडकरी से भेंट कर आर्य समाज के लोगों को लोक सभा टिकट देने की मांग की। श्री रवि चड्डा, श्री महेन्द्र भाई, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री रणसिंह राणा, श्री सुरेश आर्य, श्री सुरेन्द्र कोछड़ आदि साथ में रहे। द्वितीय चित्र में रविवार, 9 मार्च 2014 को महात्मा वेद भिक्षु जयन्ती (पं.भारतेन्द्र नाथ जी) वेद मन्दिर, इब्राहिमपुर, बुराड़ी, दिल्ली में आयोजित समारोह में माता शकुन्तला आर्या, माता राकेश रानी, श्री बनारसी सिंह, श्री श्यामसिंह शशि, डा.अनिल आर्य, श्री विद्यासागर वर्मा, श्री चमनलाल महेन्द्रु आदि।

गुरूकुल कण्वाश्रम कोटद्वार, पौढ़ी गढ़वाल का बसन्त उत्सव सौल्लास सम्पन्न

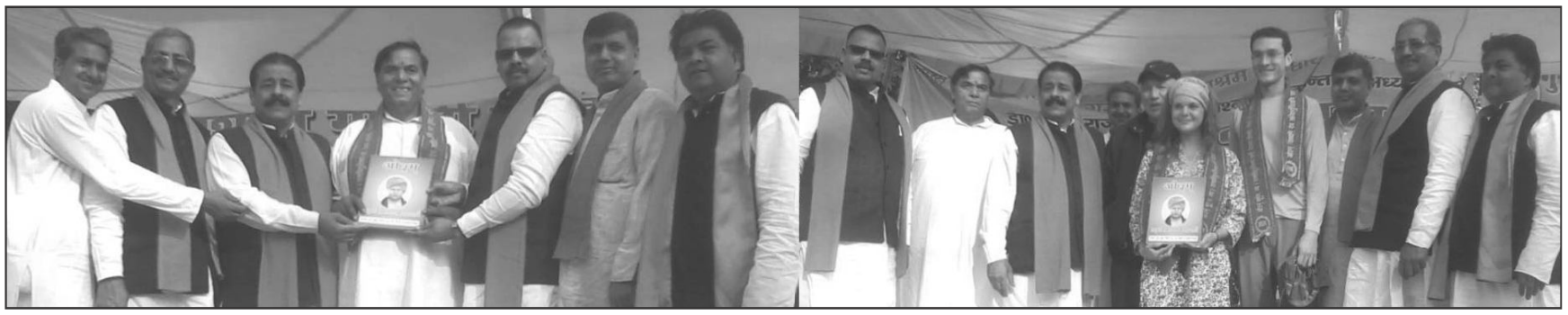

शनिवार, 8 मार्च 2014, वीर भरत की जन्म स्थली व शकुन्तला-दुष्यन्त की प्रणय स्थली के ऐतिहासिक स्थल गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार का बंसत उत्सव योगीराज ब्र. विश्वपाल जयन्त की अध्यक्षता में सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ब्र. विश्वपाल जयन्त को पुनः ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतराखण्ड'' के प्रान्तीय अध्यक्ष का कार्य भार सोंपते राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य,साथ में महेन्द्र भाई, राजवीर शास्त्री, रणसिंह राणा, सुरेश आर्य (गाजियाबाद), धर्मपाल आर्य आदि व द्वितीय चित्र में अमेरिका, लन्दन,कनाडा से पधारे अतिथियों के स्वागत का द्रश्य।

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने गुड़मण्डी व विजय नगर में मनाया ऋषि बोधोत्सव

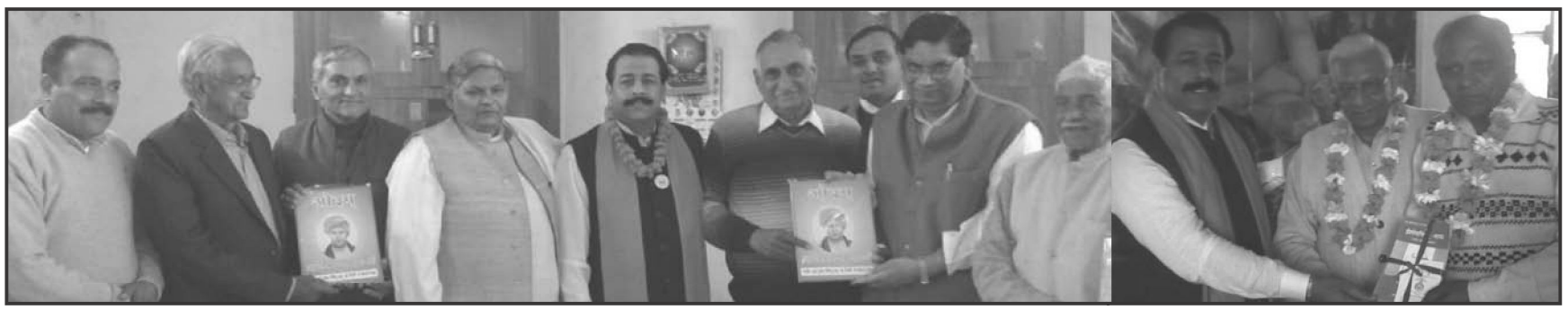

रविवार, 2 मार्च 2014, उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री ओम सपरा के नेतृत्व में आर्य समाज, गुड़मण्डी, दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव सौल्लास मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री रमेश डावर ने की व संचालन श्री वीरेन्द्र आहूजा, प्रधान समाज ने किया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य के साथ बांये से श्री राकेश बेदी, श्री सत्यपाल गांधी, श्री वीरेन्द्र आहूजा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री केवलकृष्ण सेठी, श्री रामकुमार सिंह, श्री रमेश डावर, श्री भूदेव आर्य। मण्डल के महामंत्री श्री जीवनलाल आर्य ने धन्यवाद किया। द्वितीय चित्र में-रविवार, 9 मार्च 2014 को आर्य समाज, विजय नगर, गुप्ता कालोनी, दिल्ली के उत्सव मे श्री सुदेश भगत को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य। डा.अशोक शास्त्री के प्रवचन व श्री अशोक नागपाल, कविता आर्या के मधुर भजन हुए। प्रधान श्री श्रद्धानन्द आर्य ने आभार व्यक्त किया। श्री ओम सपरा ने संचालन किया। अमेरिका से पधारे श्री राकेश बेदी का स्वागत किया गया।

गौरक्षा के लिये जैन समाज ने दिया धरना

रविवार, 2 मार्च 2014, जैन समाज की ओर से नई दिल्ली के जन्तर मन्तर पर डा. अनिल जैन के नेतृत्व में धरने का आयोजन किया गया। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने भी सम्बोधित किया। श्री गोपाल जैन ने संचालन किया।

गाजियाबाद में कवि सम्मेलन 30 मार्च को

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में नव सम्वत् यज्ञ व भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन रविवार, 30 मार्च 2014 को सायं 4 बजे से अग्रसेन भवन, लोहिया नगर, निकट पुराना बस अड्डा,गाजियाबाद में किया जा रहा है। सभी आर्य जन सादर आमन्त्रित हैं **-प्रवीन आर्य, महामंत्री**

शोक समाचार

1. माता आशा बत्रा (आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-2) का निधन।
2. श्रीमती पुष्पा डावर (धर्मपत्नि श्री रमेश डावर) का निधन।
3. श्री मदनमोहन गोगिया (आर्य समाज,केशवपुरम,दिल्ली) का निधन।
4. श्री वेद व्रत मेहता, आयु 90 वर्ष (गोविन्दपुरी, दिल्ली) का निधन।
5. श्री रामरतन यादव, आयु 21 वर्ष परिषद् के शिक्षक का निधन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970